موضوع الخطبة : الناقض السابع: الكهانة

الخطيب : فضيلة الشيخ ماجد بن سليمان الرسي/ حفظه الله

لغة الترجمة : الهندية

المترجم :طارق بدر السنابلي(@Ghiras_4T)

शीर्षक:

सातवां विच्छेद: भविष्यवाणी करना।

إنَّ الْحَمْدَ لِلَّهِ، نَحْمَدُهُ وَنَسْتَعِينُهُ وَنَسْتَغْفِرُهُ، وَنَعُوذُ بِاللَّهِ مِنْ شُرُورِ أَنْفُسِنَا وسَيِّئَاتِ أَعْمَالِنَا، مَنْ يَهْدِهِ اللَّهُ فَلَا مُضِلَّ لَهُ، وَمَنْ يُضْلِلْ فَلَا هَادِيَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ.

प्रशंसाओं के पश्चात!

सर्वश्रेष्ठ बात अल्लाह की बात है, सबसे उच्च मार्ग मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मार्ग है एवं धर्म में अविष्कार की गई हर नई चीज़ नवोन्मेष है, हर नवोन्मेष त्रुटि है और हर त्रुटि नरक में ले जाने वाली है।

अल्लाह तआ़ला से भय करो एवं उसका डर अपने हृदय में जीवित रखो, उसकी आज्ञा करो एवं अवज्ञा से वंचित रहो, एवं यह ज्ञात रखो के अल्लाह के एकेश्वरवाद में यह बात सम्मिलित है कि उसके नामों एवं विशेषताओं में केवल अल्लाह को जाना जाए, उन विशेषताओं में अल्लाह का परोक्षज्ञान भी है, परोक्षज्ञान विशेषकर अल्लाह के लिए होना किताब-व-सुन्नत एवं महाज्ञानियों की

सहमति से स्थापित है, क़ुरआन का साक्ष्य अल्लाह का यह कथन है:

﴿قُل لاَّ يَعْلَمُ مَن فِي السَّمَاوَاتِ وَالأَرْضِ الغَيْبَ إِلاَّ اللَّهُ﴾.

अर्थात: कह दो कि जो लोग आकाशों में एवं धर्तियों में है अल्लाह के अतिरिक्त कोई भी परोक्षज्ञानी नहीं है।

रही बात हदीस तो ख़ालिद बिन ज़कवान ने रबीअ़ बिन्त मुअ़व्विज़ से रिवायत किया है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक बालिका को यह कहते हुए सुना: हमारे बीच एक नबी है जो इस बात से अवगत है कि कल क्या होने वाला है, नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: यह बात मत बोलो, कल की बातें अल्लाह के अतिरिक्त कोई नहीं जानता।

(इस हदीस को इब्ने माजा: १८९७ ने रिवायत किया है एवं अल्-बानी ने इसे सहीह कहा है, इसका यथार्थ सहीह बुख़ारी: ५१४७ में है।)

इब्ने उ़मर रज़िअल्लाहुअ़न्हुमा से मरवी है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: गुप्त की कुंजियां पांच हैं, जिन्हें अल्लाह के अतिरिक्त कोई नहीं जानता, अल्लाह के अतिरिक्त इस बात से कोई अवगत नहीं कि कल क्या होने वाला है, एवं अल्लाह के अतिरिक्त कोई नहीं जानता की महिलाओं के गर्भ में क्या कटौती-बढ़ौती हुई, (इस का अर्थ यह है कि महिला के पेट में गर्भ

नौ महीने से कितने ज़्यादा या कितना कम रहता है,इस बात की जानकारी केवल अल्लाह तआ़ला को है,अल्लाह का कथन है: स्त्रियां अपने गर्भ में जो कुछ रखती हैं उससे अल्लाह भली-भांति अवगत है एवं पेट का बढ़ना घटना भी,इ़मादुद्दीन इब्ने कसीर रहिमहुल्लाह के लेख तफ़सीरूल्-क़ुरआनिल्-अज़ीम: में सूरह-रअ़द के उपरोक्त श्लोक के उल्लेख का अध्ययन करें!) अल्लाह के अतिरिक्त कोई नहीं जानता कि वर्षा कब होगी,एवं कोई व्यक्ति नहीं जानता कि उसकी मृत्यु कहां होगी,और अल्लाह के अतिरिक्त कोई नहीं जानता कि प्रलोक कब स्थापित होगा।

(इस हदीस को बुख़ारी: ४७९७ ने रिवायत किया है।)

ज्ञात हुआ कि परोक्षज्ञान विशेषकर अल्लाह हेतु होना उस अल्लाह के लिए स्थित विशेषता है जिसका कोई साझी व संगी नहीं,ना कोई निकट संबंधी देवदूत अथवा ना कोई अवतरित किए गए दूत, इस कारणवश जिसने अपने हेतु एवं किसी अन्य हेतु प्रोक्षज्ञान का दावा किया उसने अल्लाह एवं उसकी सृष्टि के बीच एक ऐसी चीज़ में प्रतिभागी स्थित किया जो केवल अल्लाह की विशेषताओं में से है,उसे अल्लाह के जैसा स्थित किया,एवं महा बहूदेववाद (शिर्क-ए-अकबर) का पाप किया,अपने युग के इमाम अहले सुन्नत नुऐम बिन हम्माद अल्-ख़ुज़ाई़ का कथन है: जिसने अल्लाह को उसकी सृष्टि के जैसा स्थित किया उसने कुफ़्र किया।

भविष्यवक्ता की पारिभषिक

अल्लाह के दासो! कुछ लोगों ने परोक्षज्ञान की विशेषता में अल्लाह के साझी होने का दावा किया है, अल्लाह तआ़ला इस दावे से बरी एवं सर्वोच्च है, यह भविष्यवक्ता हैं यह भविष्यवाणी करने वाले व्यक्ति हैं जो भविष्य के गुप्त बातों की ज्ञान का दावा करते हैं, भविष्यवक्ता एक ऐसा नाम है जिसमें भविष्यवाणी करने वाले ज्योतिषी एवं नक्षत्र की विद्या रखने वाले सभी सम्मिलित हैं, जो परोक्षज्ञान का दावा करते हैं, भविष्यवक्ता को अरबी भाषा में "अ़र्राफ़" कहा जाता है, जो कि "अ़रफ़" से अतिशयोक्ति का शब्द है, शेख मोहम्मद बिन उ़सैमीन रहिमहुल्लाह का कथन है: फ़अ़्आ़ला वज़न पर है जो अल्-कोहन वांछित है जिसका अर्थ होता है अनुमान लगाना, निराधार वस्तुओं के माध्यम से वास्तव का पता लगाना, अशिक्षितता काल में यह उन लोगों का व्यवसाय था जिनसे दुष्टदेव आकर भेंट करते थे, एवं आकाश से चुराई हुई बातों को बताते थे, इन दुष्टदेवों के माध्यम से आकाश से चुराई हुई जो भी बातें इन तक पहुंचती, उनमें असत्य एवं मनघड़त बातें मिलाते थे एवं लोगों के समक्ष उल्लेख करते थे, यदि उनके बताए हुए बात के अनुसार कुछ होता तो लोग उनके धोखे में आ जाते एवं उन्हें अपने बीच न्याय करने और भविष्य की बातें जानने हेतु अपना ठिकाना बना

लेते, इसीलिए हम कहते हैं: भविष्यवक्ता वह है जो भविष्य के गुप्त चीज़ों की सूचना दे।

शेख मोहम्मद बिन ऱुसैमीन रहिमहुल्लाह का कथन समाप्त हुआ।

ए मोमिनो! भविष्यवक्ता परोक्षज्ञान का दावा करने हेतु दो में से एक विधि को अपनाता है,

प्रथम विधि: उन दुष्टदेवों से बातें लेना जो देवदूतों की कुछ बात आकाश से उचक लेते हैं, इसका साक्ष्य सहीह बुख़ारी की आ़इशा रज़िअल्लाहुअ़ंहा से मरवी यह एक मरफ़ूअ़ रिवायत है कि देवदूत बादलों में आते हैं, एवं उस कार्य का उल्लेख करते हैं जिस का निर्णय आकाशों में लिया जा चुका होता है, तो दुष्टदेव चुपके से देवदूतों की बातें उड़ा लेते हैं एवं भविष्यवक्ताओं को बता देते हैं, एवं वह सत्य बात में अपनी असत्य बात मिलाते हैं, (फिर उसे अपने भक्तों को बता देते हैं।) (सहीह बुख़ारी: २३१०)

अल्लाह के दासो! ज्ञात हुआ कि भविष्यवक्ता असत्य की सूचना लोगों को देता है, यदि इस बात में कोई सत्यता भी होती है तो वह दुष्टदेवों की चुराई हुई बात होती है, ना कि उसके परोक्षज्ञान का कोई हस्तक्षेप होता है, कभी-कभी कुछ लोग इसी सत्य बात के कारण उत्पात में पड़ जाते हैं, एवं इनमें जो असत्य बातें होती हैं

उनकी ओर ध्यान नहीं देते, एवं यदि उसकी सारी बात असत्य रही तो कभी कभार भक्तगण संपूर्ण बातों को स्वीकार कर लेते हैं।

द्वितीय विधि: जिनों से सहायता प्राप्त करना, चाहे जिन मनुष्य का संगी हो अथवा कोई अन्य, इसी कारणवश प्रत्येक मनुष्य के साथ एक जिन लगा हुआ है, जो उसे दुष्टकर्म का आदेश देता है, आ़इशा रज़िअल्लाहुअ़ंहा से मरवी है कि कुछ व्यक्तियों ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से भविष्यवक्ता के संबंध में कुछ पूछा तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उन से फ़रमाया: वह कोई चीज़ नहीं है, उन्होंने कहा हे अल्लाह के दूत! कभी कभार यह भविष्यवक्ता ऐसी बातें बताते हैं जो सत्य स्थित हो जाती हैं, नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "वह बात है जो सत्य स्थित होती हैं उन्हें कोई जिन देवदूतों से सुनकर उड़ा लेता है, फिर अपने मित्र के कान में मुर्ग़ी की स्वर के जैसे डाल देता है, फिर उस सत्य बात में भविष्यवक्ता १०० असत्य मिला देता है"।

(बुख़ारी: ६२१३, मुस्लिम: २२२८, उल्लेख किए गए शब्द बुख़ारी के हैं।)

यह इस बात का साक्ष्य है कि मनुष्य के साथ रहने वाले जिन से भविष्यवक्ता का संबंध होता है, क्योंकि प्रत्येक मनुष्य के साथ एक जिन लगा होता है जो उसे पाप करने का आदेश देता है, यह जिन मनुष्य के संपूर्ण भेदों से अवगत होता है जिनसे अन्य

व्यक्तिगण अज्ञानी होते हैं, उदाहरण स्वरूप: यदि किसी मनुष्य की कोई वस्तु गुम हो जाए तो वह संगी जिन गुम हुई वस्तु से अवगत होता है, क्योंकि वह सदैव उस के साथ रहता है, यदि यह व्यक्ति भविष्यवक्ता से संपर्क करे एवं गुम हुए वस्तु के संबंध में उससे पूछताछ करे तो यह जिन उस भविष्यवक्ता को गुम हुए वस्तु के स्थान की सूचना दे देता है, फिर भविष्यवक्ता मनुष्य को उस स्थान की सूचना देता है, एवं उसके साथ १०० झूठ मिलाकर बोलता है, इस कारणवश यदि इंसान हेतु इस सत्य बात में यह भविष्यवक्ता सत्य प्रदर्शित होता है तो वह उसके संपूर्ण बातों को सत्य मानने लगता है, एवं यह भ्रम रखने लगता है कि यह परोक्ष ज्ञान से अवगत है, जबकि वास्तव में उसके इस विशेष संबंध में केवल उस वस्तु की सूचना दी जिसके बारे में उसके संगी जिन ने उसे बताया, उदाहरण स्वरुप वह बात जो उसके एवं उसकी पत्नी के बीच होती है उसके कर्म स्थान के बारे में, उसकी माता का नाम उसके प्रदेश का नाम एवं उसके घर का पता आदि एवं इनके अतिरिक्त वह जानकारियां जो इस जिन को पता होती हैं।

अल्लाह के दासो! भविष्यवक्ता जिस दुष्टदेव से संबंध रखता है वह उससे जो सेवा प्राप्त करता है उसके बदले वह उसकी उपासना करता है एवं दुष्टदेव का यही लक्ष्य है, आदम की वंश के पीछे केवल इस लिए पड़ा हुआ है कि उसे मार्ग-भ्रष्ट कर दे, यही उसका

कर्म एवं यही उसका संदेश है, उसके धोके की जाल में भविष्यवक्ता जादूगर एवं ज्योतिषी सभी फंस जाते हैं, ये मनुष्य में से दुष्टदेव हैं, जबकि वो जिनों में से दुष्टदेव हैं, इन संपूर्ण दुष्ट देवों से हम अल्लाह के शरण की मांग करते हैं।

अल्लाह के दासो! एक महत्वपूर्ण बात यह है कि जो लोग सही दिशा-निर्देश अनुसार झाड़-फूंक एवं उपचार करते हैं एवं जादूगरों और भविष्यवक्ताओं के कर्तव्य से अवगत हैं उनमें से किसी का कहना यह है कि: यदि आप भविष्यवक्ता का भेद खोलना चाहते हैं तो उससे ऐसी वस्तु के संबंध में पूछताछ करें जिस से आप अवगत नहीं हैं, क्योंकि जिस से आप अवगत नहीं होंगे आपका संगी जिन भी उस चीज़ से अवगत नहीं होगा इस कारणवश भविष्यवक्ता कुछ पता नहीं कर पाएगा। उदाहरण स्वरूप आप धरती से कुछ कंकरियां उठा लीजिए एवं अपने मुट्ठी बंद कर लीजिए, फिर भविष्यवक्ता से पूछिए कि मेरे हाथ में कितनी कंकरियां हैं, वह इसका उत्तर नहीं दे पाएगा, एवं भाग खड़े होने का प्रयास करेगा, क्योंकि आपका संगी जिन भी वह नहीं जानता तो भविष्यवक्ता कहां से बता पाएगा!!!

सारांश यह कि भविष्यवक्ता अपने संपूर्ण धंधों में जिनों से सहायता प्राप्त करता है, संपूर्ण घटनाओं की जानकारी हेतु उसकी ओर जाता है, फिर वह कुछ बातें उसके कान में डाल देते हैं, एवं इस आधार

पर भविष्यवक्ता अनुमान लगाकर जो सूचना देता है यदि वह सूचना सत्य स्थित हुई तो मनुष्य भ्रम करने लगता है के भविष्यवक्ता को कुछ ना कुछ परोक्षज्ञान प्राप्त है, फिर वह उसके षड्यंत्र का शिकार हो जाता है, अज्ञानी उसे अभिव्यक्ति एवं चमत्कार पर निर्भर करता है, एवं यह समझता है कि भविष्यवक्ता अल्लाह के मित्रों में से है जबकि वह दुष्टदेव के मित्रों में से है, जैसा कि सूरह-ए-शुअ़रा में अल्लाह का कथन है:

هَلْ أُنَبِّئُكُمْ عَلَىٰ مَن تَنَزَّلُ ٱلشَّيَـٰطِينُ. تَنَزَّلُ عَلَىٰ كُلِّ أَفَّاكٍ أَثِيمٍ. يُلْقُونَ ٱلسَّمْعَ وَأَكْثَرُهُمْ كَـٰذِبُونَ.

अर्थात: क्या मैं तुम्हें सुचित करूं कि दुष्टदेव किस पर अवतरित होते, वह प्रत्येक असत्य एवं पापी पर अवतरित होते हैं, उचटती हुई सुनी सुनाई पहुंचा देते हैं एवं उनमें से अधिकतम झूठे है।

एकेश्वरवादों के समूह! ज्योतिषी भी परोक्षज्ञान का दावा करते हैं, ज्योतिषी वह है जो अपने व्यक्तिगत भ्रम से सितारों की गति की माध्यम से भविष्य में घटित होने वाली घटनाओं का ज्ञान प्राप्त करते हैं, उदाहरण स्वरूप वायु बहने के समय, वर्षा होने के समय, सर्दी एवं गर्मी के ऋतु एवं मोलों के परिवर्तन इत्यादि की जानकारी, उनका दावा है कि सितारों का अपने आकाश में चक्कर लगाने एवं उनका आपस में एक दूसरे से मिलने को देखकर वो इन सब बातों का पता लगाते हैं, एवं यह कि निचले संसार में उसका प्रभाव पड़ता

है, इसे प्रभावशाली ज्ञान के नाम से याद किया जाता है, इसका दावा करने वाले को हाज़ी (ज्योतिषी) भी कहा जाता है, ऐसे रूप में ज्योतिषी सितारों को संबोधित करता है एवं दुष्टदेव उसके समक्ष वह चित्र प्रकट करता है जिसके माध्यम से वह उपरोक्त उल्लेख किए गए बातों का पता चलाता है, यह सब अनर्गल प्रलाप है।

अल्लाह के दासो! ज्योतिषी विज्ञान में यह बात भी सम्मिलित है कि भविष्य की घटनाओं का पता चलाने हेतु सितारों के चक्कर के साथ-साथ "अबजद" अक्षरों का भी प्रयोग किया जाए, इब्ने अब्बास रज़िअल्लाहुअंहुमा के इस कथन का यही अर्थ है: एक समूह (अबूजाद) का प्रयोग करता है एवं सितारों पर नज़र रखता है, एवं जो व्यक्ति ऐसा करता है मेरे विचार से परलोक में उसके हेतु कोई भागीदारी ना होगी।

(इस कथन को अब्दुल रज़्ज़ाक़ ने अल्-मुसन्नफ़: १९८०५ में रिवायत किया है, एवं उल्लेख किए गए शब्द उन्हीं के हैं, इनके अतिरिक्त,बैहक़ी ने अल्-सुननुल्-कुबरा: ८/१३९ में रिवायत किया है।)

ज्योतिषी विज्ञान का एक दृश्य यह भी है जिसका दावा कुछ अंतरिक्ष विज्ञान करते हैं कि मनुष्य के भविष्य में जो कुछ प्रकट होने वाला है उस से वो अवगत हैं, एवं इस दावे का समाचार पत्र

के माध्यम से प्रचार भी करते हैं, उसका दावा है कि जो व्यक्ति सितारों के उदय होते समय जन्म पाया उदाहरण स्वरूप बुर्ज-ए-अक़्रब के समय जन्म पाया तो वह दुर्भाग्यवान होगा, एवं इसी प्रकार जो बुर्ज-ए-मीज़ान के समय जन्म पाया तो वह सौभाग्यशाली होगा। इत्यादि...

अल्लाह के दासो! जादू का जो आदेश है वही आदेश ज्योतिषी ज्ञान का भी है, इन दोनों के बीच समानता का कारण यह है कि यह दोनों दुष्टदेव से संबंधित हैं इसका साक्ष्य: इब्ने अब्बास रज़िअल्लाहुअंहुमा से मरवी यह रिवायत है कि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: जिसने ज्योतिषी का कोई ज्ञान सीखा, तो उसने जादू का एक भाग सीखा, फिर जो इसमें अपनी भागीदारी बढ़ाना चाहता है बढ़ा ले।

(सहीह मुस्लिम: २२३०)

ज्योतिष ज्ञान को प्रभावशाली ज्ञान के नाम से भी याद किया जाता है अर्थात धरती के घटनाओं पर सितारों के चक्कर का प्रभाव, उनके कथन: (उसने जादू का एक भाग सिखा) का अर्थ यह है कि वह जादू की एक प्रकार का शिकार हो गया, आपके कथन: (फिर जो इसमें अपनी भागीदारी बढ़ाना चाहता है बढ़ा ले।) का अर्थ है: ऐसा करने वाला जितना ज्योतिष ज्ञान सीखेगा मानो उतना ही उसने जादू का ज्ञान सीखने में बढ़ोतरी की।

विष्यवक्ताओं, ज्योतिषी विज्ञानों के निकट जाने की अवैधता के साक्ष्य:

अल्लाह की दासो! इस्लाम धर्म की विशेषताओं में से एक यह है कि वह सकारात्मक शगुन लेने का आदेश देता है, मनुष्य को ऐसे कर्मों की ओर दिशा-निर्देश देता है जिन में उसकी सांसारिक एवं परलोक के जीवन की भलाइयां छुपी हुई हों, यह धर्म बहुदेववाद, अनर्गल प्रलाप एवं धोखाधड़ी से वंचित रहने का आदेश देता है, इसी कारणवश इस्लाम में दुष्टदेव के द्वारों के सामर्थ्य को बंद किया है, इसी कारणवश भविष्यवक्ता के निकट जाने को अवैध स्थित किया है, एवं भविष्यवक्ता के निकट जाने वाले को कठोर दंड देने की बात की है, चाहे केवल प्रश्न करने हेतु ही क्यों ना हो, मुस्लिम ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पत्नी सफ़ीया रज़िअल्लाहुअंहा से रिवायत किया है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: जो व्यक्ति किसी गुप्त बातों की सूचना देने वाले (भविष्यवक्ता) के पास आए, एवं उससे किसी वस्तु के संबंध में प्रश्न करे, तो ४० रातों तक उस व्यक्ति की नमाज़ को स्वीकृति नहीं दी जाएगी। (सहीह मुस्लिम: २२३०)

इसमें जो धमकी आई है वह उस व्यक्ति पर लागू होती है, जो गुप्त बातों की सूचना देने वाले भविष्यवक्ता के निकट जाए, एवं उससे केवल प्रश्न करे, चाहे वह उसे सत्य ना माने, तो भी ऐसे

व्यक्ति की नमाज़ ४० दिनों तक स्वीकार नहीं की जाएगी, परंतु काफ़िर नहीं होगा इस कारणवश वह इस्लाम के घेरे से बाहर नहीं होगा

परंतु जो व्यक्ति भविष्यवाणी करने वाले एवं गुप्त की सूचना देने वालों से प्रश्न करे, एवं उसकी बात को सत्य माने, तो वह इस्लाम के घेरे से बाहर आ जाता है, क्योंकि जब वह उसे सत्य मानता है तो इस से यह बात प्रकट होती है कि उसने परोक्षज्ञान की विशेषता में उन्हें अल्लाह का साझी स्थित किया, जबकि यह विशेषता अल्लाह ही की है, इस प्रकार वह कुरआन को असत्य भी मानता है एवं कुफ़्र भी कर बैठता है -अल्लाह का शरण- अबू हुरैरा रज़िअल्लाहुअंहु से मरवी है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: जो व्यक्ति भविष्यवक्ता एवं परोक्षज्ञान का दावा करने वाले के निकट गया एवं उसकी बात को सत्य माना, तो उसने मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अवतरित किए गए धर्म को नकारा।

(इस हदीस को अहमद: ४/४२९ इत्यादि ने रिवायत किया है, एवं अल्-मुसनद के शोधकर्ताओं ने इसे ह़सन स्थित किया है।)

इमरान बिन हुसैन रज़िअल्लाहुअंहु से मरवी है कि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: जिसने अपशगुन लिया या जिसके लिए अपशगुन लिया गया, जिसने भविष्यवाणी की या जिसके लिए

भविष्यवाणी की गई, जिसने स्वयं जादू किया अथवा जिसके लिए जादू किया गया वह हम ऐसे नहीं है, एवं जो व्यक्ति भविष्यवक्ता का के निकट गया एवं उसकी बात को सत्य माना, तो उसने मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अवतरित किए गए धर्म को नकारा (कुफ़्र किया)।

{इस हदीस को बाज़्ज़ार ने रिवायत किया है, मुसनद अल्-बाज़्ज़ार: (९/५२), (३५७८) इसके अतिरिक्त तबरानी ने अल्-कबीर: (१८/१६२) में रिवायत किया है, इनके रिवायत किए हुए शब्द कुछ इस प्रकार हैं: इमरान बिन हुसैन रज़िअल्लाहुअंहु से मरवी है कि उन्होंने एक व्यक्ति की कलाई में एक पीतल का कड़ा देखा उससे प्रश्न किया: यह क्या है? तो उसने कहा: मुझे बताया गया है कि इससे हाथ का दर्द दूर हो जाता है, फ़रमाया: यदि तुम्हारी मृत्यु इसी स्थिति में हो गई तो तुम उसी की ओर सौंप दिए जाओगे, रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: जिसने अपशगुन लिया एवं जिसके लिए लिया गया वह हम में से नहीं है...अल्-हदीस। हैसमी कहते हैं: इस हदीस को बाज़्ज़ार ने रिवायत किया है, इसहाक़ बिन अबु रबीअ़ के अतिरिक्त इस हदीस के तमाम रावी सहीह हैं, वह भी विश्वसनीय हैं, देखें: मजमउ़ज़्ज़वाइद: (५/११७) इस हदीस को बाज़्ज़ार ने इब्ने अब्बास रज़िअल्लाहुअंहुमा से रिवायत किया है, जैसा कि कश्फुल्-स्तार (३०४३) में है, इस हदीस को अल्-बानी ने

सहीहुल्-जामेइस्सग़ीर: (५४३५) एवं अस्सिलसिलतुस्सह़ीह़ा: (२१९५) में सहीह स्थापित किया है।}

अल्लाह के दासो! जिनके बीच भविष्यवाणी प्रचारित एवं प्रसारित है वह सूफिया हैं, उनके अधिकतम धार्मिकगुरु भविष्यवक्ता अथवा भविष्यवाणी करने वाले हैं, क्योंकि वे अपने धार्मिकगुरु हेतु ऋषि एवं चमत्कारी होने का दावा करते हैं, परोक्षज्ञान का दावा उनके निकट ऋषि एवं चमत्कारी होने की आवश्यकताओं में से हैं, जिसे वो "कश्फ़" का नाम देते हैं, इसे परोक्षज्ञान का नाम नहीं देते ताकि उनका अपमान ना हो।

अल्लाह के दासो! भविष्यवाणी की अवैधता के अनिवार्य होने के उल्लेख हेतु भविष्य वक्ताओं के निकट जाने वालों के कुफ़्र को स्पष्ट करने हेतु यह एक लाभदायक प्रस्तावना है, चाहे वास्तव में हो अथवा उसे अपना कर हो, अथवा केवल हृदय से इस कर्म पर अपनी सहमति अस्पष्ट करने से हो, यह सारे कुफ़्रिया कर्म हैं।

अल्लाह तआ़ला हमें एवं आपको कुरआन की बरकतों से मालामाल फ़रमाए, हमें एवं आपको इसके श्लोकों एवं बुद्धिमत्ता पर आधारित सलाह से लाभ पहुंचाए, मैं अपनी यह बात कहते हुए अल्लाह तआ़ला से अपने लिए एवं आप सभी के लिए क्षमा मांगता हूं आप भी उसे क्षमा चाहें, नि: संदेह वह अधिक पश्चाताप स्वीकार करने वाला एवं बहुत क्षमा करने वाला है !

द्वितीय उपदेश:

الحمد لله وحده، والصلاة والسلام على من لا نبى بعده، أما بعد!

प्रशंसाओं के पश्चात!

अल्लाह के दासो! अल्लाह से भय करें एवं यह ज्ञात रखें कि भविष्यवाणी में "तर्क़" भी सम्मिलित है, जो कि एक प्रकार की भविष्यवाणी ही है, जिसके सहायते से अरब समुदाय के लोग अपने व्यक्तिगत भ्रम के माध्यम से गुप्त बातों का ज्ञान प्राप्त करते थे, "तर्क़" तरीक़ से लिया गया है, "तर्क़ुल्-अरज़ि यतरुक़ुहा" उस समय कहा जाता है जब धरती पर चले, वो धरती पर कुछ लकीरें खींचते हैं, मानो वह उस पर चल रहे हों, फिर धरती पर खींची गई उन लकीरों से जो परोक्षज्ञान स्पष्ट होता है वो उसकी सूचना देते हैं।

"रिमाल" भी भविष्यवाणी का ही एक प्रकार है, इसकी विधि होती है कि, रिमाल अपने हाथ से रेत पर लकीर खींचता है, फिर उस के माध्यम से परोक्षज्ञान का दावा करता है, इसे रिमाल के नाम से जाना जाता है।

भविष्यवाणी में कंकर बाज़ी भी सम्मिलित है, जब प्रश्न करने वाला भविष्यवाणी करने वाले से किसी घटना के संबंध में प्रश्न करता है तो वह कुछ कंकरिया निकालता है, एवं विशेष विधि से उस पर

मारता है, के पश्चात -अपने असत्य दावे के आधार पर- उस प्रश्न करने वाले का उत्तर पता चल जाता है।

भविष्यवाणी का एक प्रकार "फ़िनजान" पढ़ना भी है, अर्थात: कॉफी का कप अथवा प्याला, तो कप में जो का ॅफी बच जाती है वही अधिक होती है, उस पर भविष्यवक्ता अपना ध्यान केंद्रित करता है, उस के माध्यम से पहले के आसपास लकीरें खींचता है, फिर उसके संबंध में सूचना देता है, एवं दावा करता है कि ऐसा होने वाला है।

भविष्यवाणी का एक प्रकार अग्नि को पढ़ना भी है, कभी कभार भविष्यवक्ता अग्निज्वाला के रूप एवं अग्नि के लौ की सहायता से अपने व्यक्तिगत भ्रम के माध्यम से भविष्य का ज्ञान प्राप्त करता है।

भविष्यवाणी का एक प्रकार हथेली पढ़ना भी है, जिसमें भविष्यवक्ता हथेली पर पड़े लकीरों, उन लकीरों के टेढ़े पन एवं आपसी संबंध पर विश्वास करता है, फिर यह दावा करता है कि ऐसा ऐसा होने वाला है।

भविष्यवाणी में "इ़याफ़ा" (पक्षियों को आकर अपशगुन लेने की विधि) भी सम्मिलित है, इसकी विधि है कि पक्षियों को उड़ाया

जाता है, यदि वह दाहिनी ओर उड़े, मंगलकारी लो, एवं बाएं ओर उड़े तो कहते हैं अपशगुन लो, यह भविष्यवाणी है।

निःसंदेह "इ़याफ़ा" एक असत्य कर्म है, क्योंकि पक्षी अल्लाह की सृष्टियों में से एक है, उसके अंदर प्रभाव एवं उपाय की कोई योग्यता नहीं, बल्कि अल्लाह तआ़ला उसके संपूर्ण चीज़ों का उपाय करता है एवं उसके पालन-पोषण की व्यवस्था करता है।

أَلَمْ يَرَوْا إِلَى ٱلطَّيْرِ مُسَخَّرَٰتٍ فِى جَوِّ ٱلسَّمَآءِ مَا يُمْسِكُهُنَّ إِلَّا ٱللَّهُ.

अर्थात: क्या उन लोगों ने पक्षियों को नहीं देखा जो आज्ञाकारी बनकर वातावरण में हैं, जिन्हें अल्लाह के अतिरिक्त कोई नहीं थामे हुए है।

इसके अतिरिक्त अल्लाह सर्वश्रेष्ठ का कथन है :

أَوَلَمْ يَرَوْا إِلَى ٱلطَّيْرِ فَوْقَهُمْ صَـٰٓفَّـٰتٍ وَيَقْبِضْنَ مَا يُمْسِكُهُنَّ إِلَّا ٱلرَّحْمَـٰنُ إِنَّهُۥ بِكُلِّ شَىْءٍۭ بَصِيرٌ.

अर्थात: क्या यह अपने ऊपर खोले हुए एवं (कभी-कभी) समेटे हुए (उड़ने वाले) पक्षियों को नहीं देखते, उन्हें (अल्लाह) रहमान ही (वायु एवं वातावरण) में थामे हुए है, नि:संदेह प्रत्येक वस्तु उसकी दृश्य में है।

भविष्यवाणी में अपशगुन लेना भी है, इसमें समान अपशगुन सम्मिलित है, चाहे वह देखी हुई वस्तु से हो अथवा सुनी हुई बात से, इसका अर्थ है पक्षियों को उड़ा कर उसके उड़ने की दिशा से

अपशगुन लेना, यदि दाएं ओर उड़े तो मंगलकारी लेना, एवं बाय ओर उड़े तो अपशगुन लेना, शब्दकोश के अनुसार अपशगुन (तियरह) एवं इयाफ़ा दोनों का अर्थ एक ही है, परंतु इसमें विस्तार है, इसलिए कि इसमें अपशगुन के संपूर्ण प्रकार सम्मिलित हैं, उदाहरण स्वरूप उल्लू एवं कौवा को देखकर अपशगुन लेना, १३ की संख्या से अपशगुन लेना, काना लंगड़ा एवं अपाहिज को देखकर अपशगुन लेना, जब कोई काना मनुष्य को देखे तो कहे आज का दिन बुरा है, इस कारणवश अपना प्रतिष्ठान बंद कर दे एवं क्रय-विक्रय ना करे, मानो उसे विश्वास हो चला कि आज के दिन उस पर कोई दुख प्रकट होने वाला है, यदि मनुष्य को दाहिने हाथ में खुजलाहट हो तो कहे कि ऐसा होगा, यदि बाएं हाथ में खुजलाहट हो तो कहे वैसा होगा, यह एवं इन जैसी संपूर्ण चीज़ें जिनमें अल्लाह ने अपशगुन नहीं रखा है, परंतु लोगों ने अपशगुन बना लिया है, एवं उस दिन को अपने हेतु अशुभ मान लिया है, जबकि अल्लाह ने उसे अशुभ दिन नहीं बनाया, मानो उस ने यह दावा किया कि उस दिन कुछ होने वाला है, इस ज्ञान में वो अल्लाह के साझी हैं, वह इस प्रकार की उन्होंने ऐसी चीज़ों पर विश्वास किया जिनको उन्होंने कारण स्थापित किया जो कि वास्तव में उस अरुचिकर चीज़ के कारण नहीं है, जिनके स्थापित होने की वो आशा करते हैं।

अपशगुन अवैध है बल्कि बहुदेववाद है, इसका साक्ष्य अब्दुल्लाह बिन ड़मर रज़िअल्लाहुअंहुमा की यह हदीस है रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: जिस व्यक्ति को अपशगुन ने अपनी आवश्यकता पूरी करने से रोक दिया, उस ने बहुदेववाद किया, सहाबा ने प्रश्न किया: हे अल्लाह के दूत: इसकी भरपाई (कफ़्फ़ारा) क्या है? आप ने फ़रमाया: यह कहना कि :

اللهم لا خير إلا خيرك ولا طير ألا طيرك ولا إله غيرك.

अर्थात: तेरी प्रदान की गई भलाई के अतिरिक्त कोई भलाई नहीं, तेरे स्थापित किए गए अपशगुन के अतिरिक्त कोई अपशगुन नहीं, एवं तेरे अतिरिक्त कोई वास्तविक पूज्य नहीं।

(इस हदीस को अहमद: २/२२० ने रिवायत किया है एवं अल्-मुसनद के शोधकर्ताओं ने इसे हसन स्थापित किया है।)

अपशगुन के अवैध होने का एक साक्ष्य अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की यह हदीस है: छूत लग जाना, अपशगुन लेना, उल्लू, एवं सफ़र के महिने को अशुभ मानने की कोई वास्तविकता नहीं।

(इस हदीस को बुख़ारी: ५७०७, एवं मुस्लिम: २२२० ने अबू हुरैरा रज़िअल्लाहुअंहु से रिवायत किया है।)

आपका यह कथन: "अपशगुन लेने की कोई वास्तविकता नहीं" स्पष्ट रूप से अपशगुन को नकारता है।

सारांश यह कि भविष्यवाणी के कई प्रकार हैं, परंतु संपूर्ण भविष्यवक्ताओं में जो समानता है वह है परोक्षज्ञान का दावा करना, किंतु इनकी विधियां विभिन्न हैं, इनमें से कुछ का दुष्टदेवों से संबंध होता है, कुछ लोग केवल इसका दावा करते हैं ताकि लोगों को धोखे के जाल का शिकार बना सकें, अल्लाह हमें उनके बुराइयों से सुरक्षित रखे।

आप यह भी ज्ञात रखें कि अल्लाह तआ़ला ने आपको एक बड़े कर्म का आदेश दिया है,अल्लाह का कथन है:

إِنَّ ٱللَّهَ وَمَلَٰٓئِكَتَهُۥ يُصَلُّونَ عَلَى ٱلنَّبِيِّۚ يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ صَلُّواْ عَلَيۡهِ وَسَلِّمُواْ تَسۡلِيمًا.

अर्थात: " अल्लाह तआ़ला एवं उसके देवदूत उस नबी पर रहमत भेजते हैं और ए विश्वासियो! तुम भी उन पर दुरूद भेजो एवं अधिक सलाम भेजते रहा करो"।

اللهم صل وسلم على عبدك ورسولك محمد، وارض عن أصحابه الخلفاء الأئمة الحنفاء وارض عن التابعين ومن تبعهم بإحسان إلى يوم الدين.

हे अल्लाह! हमारे हृदय को पाखंडी पने से, हमारी उपासनाओं को दिखावे से एवं हमारे नेत्रों को विश्वासघात से पवित्र कर दे!

हे अल्लाह हम तुझसे शांति पूर्वक जीवन विस्तार पूर्वक रोज़ी-रोटी एवं पुण्य कर्म के लिए प्रार्थना करते हैं!

हे अल्लाह! हम तुझ से संसार एवं प्रलय के संपूर्ण भलाईयों की मांग करते हैं, जिनसे हम अवगत हैं या जिन से अज्ञात हैं, हम तेरा शरण चाहते हैं संसार एवं प्रलय के संपूर्ण बुराइयों से जिनसे हम अवगत हैं अथवा जिनसे हम अज्ञात हैं!

हे अल्लाह! हम तुझसे स्वर्ग की मांग करते हैं, एवं उस कथनी और करनी की भी मांग करते हैं जो हमें स्वर्ग के निकट कर दे, और तेरा शरण चाहते हैं नरक से एवं ऐसी कथनी और करनी से जो हमें नरक के निकट कर दे!

हे अल्लाह हमें संसार में लाभ दे एवं प्रलय में भी भलाइयां प्रदान करना, एवं नरक के प्रकोप से वंचित रख!

लेखक: माजिद बिन सुलेमान अल्-रसी

अनुवादक: तारिक़ बदर सनाबिली